International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

छीपा (जोशी कुटुम्ब) समाज की अनन्य देन : राजस्थानी फड़ (चित्रकला)

अनिता नागर

जुनियर रिसर्च फैलो इतिहास विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर

सारांश :

भारत वर्ष रंग–बिरंगी संस्कृति का विविधताओं से भरा देश है जिसमें राजस्थान के तीज त्यौहार व परम्परायें अपना अलग विशिष्ट स्थान रखती है। जो विभिन्न ऋतुओं एवं स्थान विशेष के अनुकूल देखने को मिलती है। ये छवि राजस्थान की कलाओं को विश्व में अलग स्थान दिलाती है। आज के इस मशीन आधुनिकीकरण की दुनिया में भी राजस्थानी फड़ चित्रकला को विश्व विख्यात दर्जा प्राप्त है। जो शाहपुरा जिले में जन्मी व यहीं फलीभूत होकर विश्व में फैली। इसे फैलाने व ख्याति दिलाने का दर्जा छीपा समाज (जोशी परिवार) को दिया जाता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान में फड़ चित्रण का अध्ययन करना, फड़ बनाने में छीपा समाज व फड़ निर्माण की विधि को जानकारी प्राप्त करना है एवं फड़ धात्री परिवार से प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जिन्होंने फड़ चित्रण कला को नए–नए आयाम देकर जीवंत रखा। राज्य सरकार व भारत सरकार से फड़ कला को आर्थिक, वित्तीय सहायता प्राप्त कर संरक्षण दिलवाना व राष्ट्रीय पहचान दिलवाना है।

फड़ चित्रकला कपड़े पर प्राकृतिक रंगों से बनी पेंटिंग है जिसमें देवताओं, लोकनायकों के जीवन चरित का वर्णन लयबद्ध तरीके से भोपाओं द्वारा बांचा जाता है।

मूल बीज : फड़ चित्रकारी, लोककला, छीपा जोशी कुटुम्ब, भोपा–भोपी, वाद्ययंत्र, बांचना, जी–20 समिट।

परिचय :

राजस्थान की रंग–बिरंगी संस्कृति में अनेक हस्तकलाएँ जीवंत है। यह अपनी पारम्परिक कलाओं और शिल्पों के माध्यम से संस्कृति की धरोहर को जीवित रखने में अग्रणी है। यहाँ की लोक चित्रकारी लोकप्रिय पौराणिक हिन्दू देवताओं, मानवीय चित्रों, लोकनायकों, लोक देवताओं पर की जाती है। राजस्थानी लोकप्रिय चित्रकलाओं में सांझ्या चित्रकला, पिछवाई चित्रण, फड़ चित्रण, लघु चित्रकला शामिल है। फड़ चित्रकला की उत्पत्ति राजस्थान के शाहपुरा (भीलवाड़ा) जिले में हुई। यह कला 700 वर्ष पुरानी है। इसके वाहक छीपा समाज के जोशी कुटुम्ब है। फड़ चित्रों में आकृतियों और चित्रात्मक घटनाओं से भरी प्रस्तुति की जाती है। इनका विषय स्थानीय देवताओं और उनकी समस्याओं, प्रेम, क्रोध, संघर्ष, त्याग, वीरता व उनकी जीवनियाँ विशिष्ट शैली में प्रस्तुत की जाती है। इसमें मुख्य रूप से नारंगी, लाल, हरे, भूरे, नीले और काले रंगों का प्रयोग विशेष है। रामायण, महाभारत, लोककथा की गई चित्रण का वादन विशेष समुदाय भोपाओं द्वारा विभिन्न वाद्ययंत्रों द्वारा रात्रि में किया जाता है।

उद्देश्य :

1. राजस्थान में फड़ चित्रण का अध्ययन।
2. फड़ चित्रकला में छीपा समाज की भूमिका (योगदान)
3. फड़ चित्रण कला की निर्माण विधि का अध्ययन।

महत्त्व :

चित्रण कला भारतीय संस्कृति की सबसे पुरानी व सबसे अधिक मांग वाली हस्तकला है। राजस्थानी की चित्रकला प्राचीन मेवाड़, मारवाड़, ढूँढाड़, हाड़ौती एवं शेखावटी चित्रकला शैली के रूप में बँटी है। इनमें मेवाड़ की फड़ चित्रण कला ने अपनी ख्याति प्राप्त कर अलग स्थान पाया है। वर्तमान संसद भवन में देश की सबसे बड़ी 75 फीट की फड़ इसका ताजा उदाहरण है जो अपनी ख्याति की कहानी भी बयां करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में छीपा समाज द्वारा फड़ चित्रण कला के योगदान एवं इसे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में इनकी भूमिका देखने को मिली जो अग्रलिखित है –

राजस्थान में फड़ चित्रण का अध्ययन

(क) राजस्थान की चित्रशैलियाँ

राजस्थान की अनेकों हस्तकलाओं में प्रसिद्ध फड़ चित्रण कला का विशिष्ट स्थान है जो पूरे विश्व में भारत के गौरव का प्रतीक है। राजस्थान में क्षेत्रीय आधार पर चार चित्रकला शैलियाँ है – मेवाड़ (उपशैली – चावंड, नाथद्वारा, देवगढ़, उदयपुर एवं सावर शैली), मारवाड़ (उपशैली – बीकानेर, जोधपुर, किशनगढ़, नागौर, पाली), ढूँढाड़ (उपशैली – मोजमाबाद, जयपुर, आमेर, शेखावटी, उनियारा) एवं हाड़ौती (उपशैली – कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़)। अन्य शैलियों में उदयपुर की मिनियेचर शैली, नाथद्वारा की पिछवाई बस्सी की कावड़ शैली (बेवाण) देवी देवताओं व पुराणों का चित्रण लकड़ी पर किया जाता ळें

(ख) फड़ चित्रण कला

राजस्थान की लोककला जैसे – सांझ्या, मांडणा, मूर्तिकला, टेराकोटा, भित्तिचित्रों में फड़ चित्रण का अलग स्थान है। फड़ संस्कृत में पट्ट से लिया गया है जिसका अर्थ वस्त्र या पर्दा होता है एवं हिन्दी में यह 'पड़' शब्द से लिया है जिसका अर्थ कथावाचन होता है। यह संगीत और नृत्य एवं लोकवाद्यों से मिलकर तैयार हुई लोकचित्रकला है। यह मेवाड़ शैली कीहै जिसकी शुरूआत मुगल बादशाह शाहजहाँ के काल (1631) से मानी जाती है। 700 साल पुरानी यह चित्रकला हमारी प्राचीन संस्कृति की भी द्योतक है जो स्थानीय देवताओं की धार्मिक कथाएँ कहती है। चित्रकला की इस शैली को पारम्परिक रूप से कपड़े के लम्बे टुकड़ों पर फड़ के रूप में जाना जाता है।

चित्रों में आंकड़े हमेशा दर्शक के बजाय एक दूसरे का सामना करते हैं जैसे कि वे एक दूसरे से बात कर रहे हो। पेंटिंग की इस शैली की एक और दिलचस्प विशेषता यह है कि देवता की आँखे हमेशा अंत में खींची जाती है क्योंकि कलाकारों का मानना है कि इससे देवता जागृत होते हैं और उसके बाद पेंटिंग एक यात्रा मंदिर बन जाती है। फड़ का गायन और प्रदर्शन रात्रि में रेबारी, कामड़, नायक जाति के भोपा विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ करते हैं। परम्परागत रूप से इसका गायन जब किसी की मनोकामना पूर्ण हो जाती है या कभी–कभी मनोरंजन हेतु भी मंदिरों या घरों में करवाया जाता है। देवनारायण जी की फड़ सबसे लम्बी व सबसे छोटी (डाक टिकिट पर) है। पाबूजी की फड़ सबसे लोकप्रिय है। रामदेवजी की फड़ पौराणिक देवताओं राम, कृष्ण, हनुमानजी, पंचतंत्र के पात्र की भी है। आधुनिक समय में महापुरूषों की भी फड़ प्रचलन में है – अमिताभ बच्चन, कोरोना की कथा आदि।

फड़ निर्माण विधि

फड़ चित्रकला में रूपों के लिए पेंट बनाने के लिए पौधों और खनिजों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों के वे गोंद और पानी के साथ मिलाया जाता है। फड़ चित्रों को हाथ से बुने मोटे सूती कपड़े पर बनाया जाता है, फिर इसे चावल या गेहूँ के आटे से स्टार्च कडा किया जाता है, फैलाया जाता है, धूप में सुखाया जाताहै और सतह को चिकना करने के लिए मूनस्टोन से रगड़ा जाता है। फड़ पेंटिंग बनाने की पूरी प्रक्रिया पूरी तरह से प्राकृतिक है जिसमें प्राकृतिक रेशों का उपयोग होता है और पत्थरों, फूलों, पौधों और जड़ी बूटियों से प्राकृतिक चित्र बनाए जाते हैं। पेंट कलाकारों द्वारा हस्तनिर्मित होते हैं। इसमें रंगों का भी अलग–अलग महत्व है।

फड़ चित्रण में छीपा समाज का योगदान

राजस्थान की फड़ चित्रकला के जन्मदाता भीलवाड़ा शाहपुरा के छीपा समाज को माना जाता है जिनकी पीढ़ी दर पीढ़ी इसे जीवंत रखा है। इस समय इनकी 16वीं पीढ़ी काम कर रही है। प्राचीन परम्पराओं से चलती आयी यह कला पूर्वजों द्वारा सिखाई गई तकनीकों का पालन करना उतना ही महत्वपूर्ण है। यह काफी जटिलता के साथ बनाई जाती है जिसे पूरी करने में महीनों तक लग जाते हैं। चूंकि फड़ कला की परंपरा का बारीकी से संरक्षण किया गया था इसलिए आर्ट फॉर्म के लिए इसके लुप्त होने का खतरा स्वाभाविक था। कलाकृति को संरक्षित करने और पुनर्जीवित करने की इच्छा के साथ, पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित, श्रीलाल जोशी फड़ परम्परा से जुड़े सभी रूढ़ीवादी विचारों को चुनौती देकर, 1960 में जोशी बाला कु[redacted] ज स्थापित कर लगभग, 3000 से अधिक कलाकारों को प्रशिक्षित किया और छीपा समाज के पद्मश्री से सम्मानित स्व. श्री लाल जोशी, राष्ट्रीय पुरस्कार से श्री कल्याण जोशी, श्री गोपाल जोशी, श्री शांतिलाल जोशी, श्री विजय कुमार जोशी, श्री विवेक कुमार जोशी राष्ट्रीय पुरस्कार व राष्ट्रीय फैलोशिप प्राप्तकर्ता है।

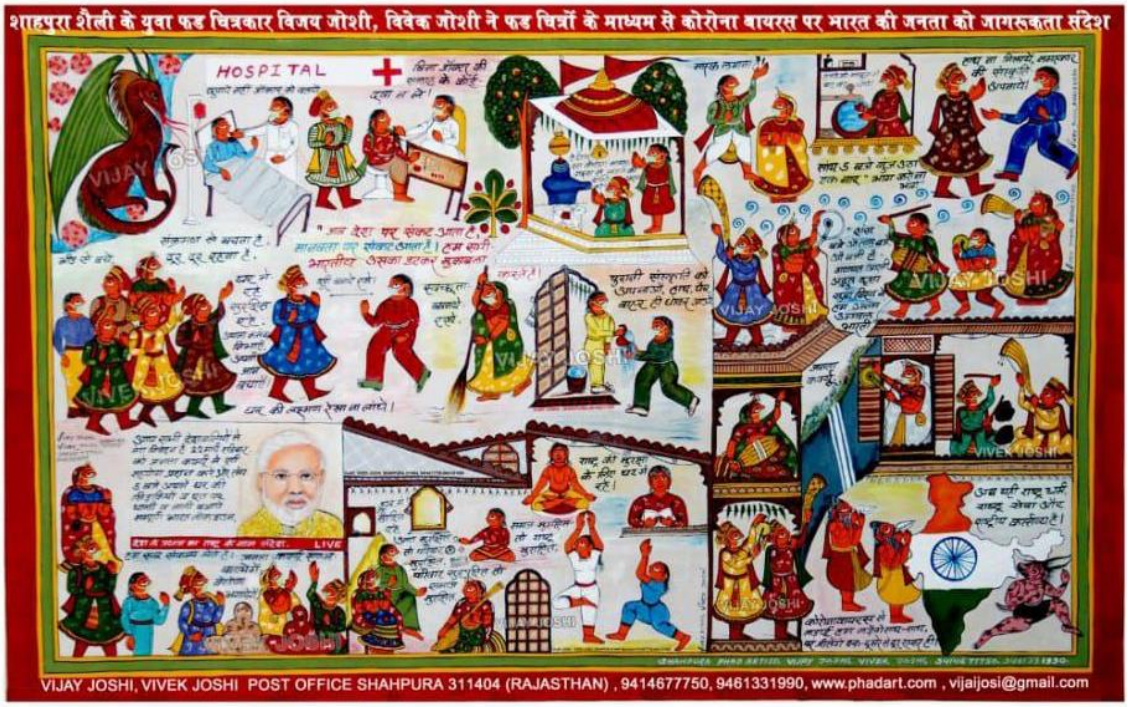

इन्होंने अपनी मेहनत व लगन, कर्मनिष्ठा से फड़ कला को विश्व में सम्मानित स्थान दिलाया है। आज फड़ ना केवल भारत में इंदिरा गांधी एयरपोर्ट गैलेरी में, संसद भवन में, अमिताभ बच्चन के ड्राइंग रूप में बल्कि अमेरिका के व्हाइट हाउस में भी लगकर चार चांद लगाकर अपनी प्रसिद्धि बयान कर रही है।

निष्कर्ष :

प्राकृतिक रंगों से बनी फड़ कपड़े पर कलाकार द्वारा चित्रित की जाती है। सदियों पुरानी इस कला को राष्ट्रीय पहचान भीलवाड़ा के छीपा जोशी परिवार द्वारा दिलावाई गई एवं इनकी बनाई फड़ दिल्ली के राजभवन से लेकर अमेरिका के व्हाइट हाउस तक में लगी हुई है। यहाँ की बनी हुई फड़ पेंटिंग हजारो राजकीय कार्यालयों में लगी हुई है। श्री कल्याण जोशी 13वीं शताब्दी के फड़ चित्रकारों के वंश से आते हैं। इस समय आर्टिस्ट ग्रुप के संस्थापक आर्ट स्कूल व चित्रशाला भी चला रहे है। इन्होंने लॉक्डाउन में पूरे कोरोना काल को पेंटिंग में समाहित किया है। जोशी परिवार द्वारा निर्मित 75 फिट लम्बी देवनारायण जी, की फड नए संसद भवन की शोभा बढ़ा रही है।

श्री कल्याण जोशी

जोशी परिवार की फड़ पेंटिंग के मुरीद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व राष्ट्रवति द्रोपदी मुर्मु भी है। हाल ही में 10 से 13 सितंबर को आयोजित जी–20 समिट में विश्व प्रसिद्ध फड़ चित्रकारी को श्री कल्याण जोशी ने प्रदर्शित किया व देश विदेश से आए मेहमान प्रतिनिधि को फड़ कला से रूबरू करवाया व लाइव डेमोस्ट्रेशन दिया जिसकी मेहमानों ने तहेदिल से प्रशंसा की। जोशी (छीपा) परिवार ने कला के जगत में राजस्थान का नाम रोशन किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. राजवंशी आर. श्रीवास्तव एम. (2013) भीलवाड़ा की फड़ चित्रकला। एशियन जर्नल ऑफ होम साइंस।
2. कल्याण जोशी (2023) फड़ पेंटिंग की कार्यशाला, परम्परागत कारीगर से रूबरू हुई बातचीत।
3. श्री शांतिलाल जोशी से हुई बातचीत। (साक्षात्कार)
4. श्री विजय जोशी एवं विवेक जोशी से हुई बातचीत (साक्षात्कार)
5. शर्मा ई. (2015) भारत की जनजातीय लोक कथाएँ। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल एकेडमिक रिसर्च फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी।
6. 'मेवाड़ की लोककला का अध्ययन' वंदना जोशी (2012)
7. ''राजस्थान की फड़ चित्रशैली तथा चित्रकार ओम प्रकाश जोशी आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर (1987)
8. 'फड़ पेंटिंग ऑफ भीलवाड़ा राजस्थान' रूपाली राजवंशी, मीनू श्रीवास्तव, एशियन जर्नल ऑफ हॉम साइंस, वॉल्यूम–8, दिसंबर 2013